 Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2348-473X

नीना पॉल की कहानियों में सामाजिक चेतना (प्रवासी साहित्य के संदर्भ में)

डॉ. दीपिका घई

हिन्दी विभाग

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, यमुनानगर ।

शोध पत्र सार

कहा गया है साहित्य समाज का दर्पण है अर्थात् साहित्य वह आईना है जिसमें हम तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब देख सकते हैं । साहित्य की कोई भी विधा हो, कहानी, नाटक, उपन्यास, कविता अथवा अन्य कोई भी साहित्यकार किसी न किसी रूप में अपनी रचना में अपने सुख-दुख, तत्कालीन समाज, राजनीति, धर्म, अन्धाविश्वास, पाखण्ड, समस्याएं आदि जो कुछ उसने अपने जीवनकाल में अनुभव किया उसे ही अपनी रचना में अभिव्यक्त करता है, इससे भिन्न कोई भी साहित्य नहीं, मानवीय प्रवृत्तियों का साकार रूप देने का कार्य यदि समाज करता है तो उस वृत्तियों को सार्वजनिक, सार्वदेशिक बनाने का कार्य साहित्य करता है।

समाज के आदर्श तत्व सत्यं, शिवं, सुंदरम, इन तीनों का संतुलित समावेश साहित्य के द्वारा किया जाता है क्योंकि जो समाज का सत्य और सुन्दर है साहित्य उसे प्रस्तुत करता है कल्याणकारी भावना अर्थात् शिवं के साथ। साहित्य सृजन एक ऐसी आन्तरिक प्रतिभा है जिसके बीज कहीं न कहीं मानव मन में दबे होते हैं और अनुकूल स्थिति पाकर वह अंकुरित होते है और धीरे-धीरे सतत् अभ्यास से वह पुष्पित और पल्वित हो वह साहित्यकार की इस सुगंधि रूपी यश को दूर-दूर तक फैला देते हैं । साहित्य सृजन किसी भी परिवेश में अपना स्थान प्राप्त कर लेता है चाहे वह ग्रामीण, आंचलिक, शहरी, पहाड़ी क्षेत्र, देश अथवा परदेश में ही क्यों न हो । साहित्यकार सामाजिक यथार्थ के माधयम से देश-विदेश की ज्वलंत समस्याओं को साहित्य के माध्यम से सामने लाता है ताकि वह अपने अनुभव द्वारा समाज को दिशा-निर्देश दे सके, साहित्यकार ऐसा सजग प्राणी है जो लोगो को युगीन यथार्थ से परिचित करवाता है साथ ही सही मार्गदर्शन भी करता है ।

विषयसूचक शब्द - आदित्य, प्रवासी, प्रतिबिम्ब

भूमिका

अंधकार हैं वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है

मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है

"कलाकृति एक बच्चा है, कलाकार उसकी मां है और परविश उसका पिता । न्यूटन की इस उक्ति से स्पष्ट है कि साहित्य का सीधा संबंध जीवन से है । साहित्य में मनुष्य की अनुभूतियों का प्रभावपूर्ण वर्णन होता है । जीवन से अलग हटकर साहित्य-सृजन की कल्पना निराधार है । साहित्य के बीज, जीवन के प्रांगण में ही अंकुरित होते हैं । मनुष्य जो कुछ देखता है और अनभव करता है उसे ही शब्दों में पिरो देना चाहता है। साहित्यकार इसी समाज का एक अंग होता है, जिसकी अभिव्यक्ति उसकी कृतियों में देखी जा सकती है । साहित्यकार की सृजन प्रेरणा जीवन में ही विद्यमान होती है । जीवन के ही खट्टे-मीठ अनुभव उसकी कृतियों में कलात्मक अभिव्यक्ति पा जाते हैं । साहित्यकार के सुख-दुख सर्वथा वैयक्तिक मान लिए जाते हैं,

परन्तु वास्तविकता तो यह है कि उसके अनुभव, प्रवणता, संवेद्यता और यहां तक कि उसकी वैयक्तिकता भी सामाजिक घातों-प्रतिघातों की निर्मिति होती है ।”

साहित्य वह माध्यम है जो व्यक्ति के लिए समाज, संस्कृति, देश, विदेश, रीति-रिवाज़ से जोड़ने वाले सम्पर्क सेतु का कार्य करता है । समाज में जो कुछ घटित होता है वहीं साहित्यकार की लेखनी में कैद हो जाता है, क्योंकि साहित्यकार चाहे अपनी धरती पर रह रहा हो या विदेशी धरती पर वह अपने परिवेश से प्रभावित होता है और इसी अनुभव को साहित्य के माध्यम से पाठकों से परिचित करवाता है ।

प्रवासी साहित्य अर्थात् दूसरे देशों में रह रहे भारतीय लेखकों द्वारा लिखा गया साहित्य जिसमें वे पाश्चात्य संस्कृति में रहते हुए भी भारतीयता के विविध रंगो को प्रस्तुत करते हैं । हिन्दी शब्दकोश में प्रवासी शब्द का अर्थ है - विदेशों में रहने वाले, और व्यापक अर्थ में प्रवासी साहित्य का अर्थ है वह लेखन जो अपने देश से दूर हुआ हो यानि विदेशी धरती पर लिखा गया हो, वह प्रवासी साहित्य है । अनेक भारतीय ऐसे हैं जो भारत से दूर अनेक देशों में रहते हुए हिन्दी रचना व विकास के कार्यो में लगे हुए हैं और अपने नियमित लेखन व अध्यापन से विदेशों में भी हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं । इन प्रवासी साहित्यकारों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि इनकी रचनाओं में अलग-अलग देशों की संस्कृति एवं सभ्यता का वर्णन होता है और हम भारतीय विदेशी धरती से दूर होते हुए भी उससे परिचित हो जाते हैं । आज हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली पांच भाषाओं में से एक है तो इसका श्रेय इस विशाल प्रवासी समुदाय को भी जाता है जो भारत से इतर देशों में रहते हुए भी हिन्दी भाषा को अपनाये हुए हैं । भारतीय मूल के लोग समस्त विश्व में रह रहे हैं जिन्होंनें विदेशी धरती को अपनी कर्मभूमि बनाया हैं। इन भारतीय लेखकों के सृजनात्मक लेखन को ही प्रवासी साहित्य कहा जाता है ।

“दरअसल प्रवासी साहित्य हिन्दी साहित्य भारत से बाहर के भारत का यथार्थ रूप है । यह साहित्य भारत के हिन्दी साहित्य और भारतेतर हिन्दी साहित्य और साहित्यकारों के बीच ही नहीं बल्कि भारत की संस्कृति और अन्य देशों की संस्कृति के अन्त:सम्बन्धां का सम्पूर्ण विश्लेषण हमारे सामने प्रस्तुत करता है ।”

प्रवासी हिन्दी साहित्यकार ब्रिटेन, कनाडा, मॉरिशस, सूरीनाम, अमेरिका आदि स्थानों को अपनी कर्मभूमि स्वीकार कर साहित्य सृजन करते आये हैं । आधुनिक युग में मान-सम्मान, पैसे, अस्तित्वबोध, कैरियर, नशा, विदेशी चकाचौंध आदि के कारण पारिवारिक,, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में यथार्थ एवं अलगाव से द्वंद्वात्मक स्थिति उत्पन्न हो रही है प्रवासी साहित्यकार इन्हीं परिस्थितियों से रूबरू होकर प्रवासी जीवन के अनछुए पहलुओं को बेहद आत्मीय तरीके से अपनी कहानियों में वर्णित कर रहे ह । प्रवासी लेखन कार्य में न केवल लेखक बल्कि महिला लेखिकाओं ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है । इन महिला साहित्यकारों में नीना पॉल हिन्दी साहित्य में सशक्त हस्ताक्षर लेखिका के रूप में प्राख्यात हैं । हरियाणा के अम्बाला शहर में जन्मी और अब यू.के. में रह रही नीना पॉल शायरी, गायकी, लेखन आदि कलाओं में पारंगत हैं । बड़े उस्तादों से संगीत शिक्षा प्राप्त कर गायकी से रेडियों, टी.वी. व अनके आयोजनां में अपनी पहचान बना चुकी हैं। विदेशी धरती पर रहते हुए भ इनकी कहानियों में भारतीय मिट्टी की महक अनुभव की जा सकती है । इनकी कहानियों में कल्पना एवं यथार्थ का ऐसा तानाबाना है कि पाठक स्वयं को उनकी कहानी का हिस्सा मानने लगता है । सामाजिक परिवेश को आधार बनाकर वे अनेक समस्याओं की रचना भी करती हैं तो साथ ही उसका समाधान भी प्रस्तुत करती हैं । आधुनिक समाज की प्रमुख समस्याएँ यथा यौन शोषण, विस्थापन, देह,

व्यापार, बलात्कार, नशा, विदेशी चकाचौंध, पारिवारिक विघटन, लालच इन सबसे इनकी कहानियां पाठक को ऐसे रूबरू करवाती हैं मानों वे हमारे आसपास की ही घटनाएं हैं ।

नीना पॉल ने अपनी कहानियों में समाज की कई ऐसी समस्याआ और संवेदनाओं को बारीकी से प्रस्तुत किया हैं जो हमारे आसपास अनेक रूपों में घटित हो रही हैं । यौन उत्पीड़न हमारे समाज की ऐसी घटना है जो मानवीयता को कलंकित करती है और वह भी पारिवारिक रिश्तों में हो तो इंसानियत खुद ही शर्मसार हो जाये । नीना पॉल की दो कहानियां 'ऐसा क्यों' तथा 'वह एक पल' में ऐसी बेटियों की व्यथा है जिनके पिता ही उनके साथ जबरदस्ती करते हैं दोनों ही कहानियों में सौतेले पिता हैं, परन्तु रिश्ता तो बाप बेटी का ही है । 'ऐसा क्यों?' कहानी में जेनी जिसकी माँ सूजन ने उसके पिता से तलाक ले लिया है और अब वह डेविड से विवाह करने वाली हैं परन्तु डेविड अपनी बेटी बनने जा रही जेनी पर बुरी नजर रखता है और यदा-कदा उसके साथ बदसलूकी करता है जिसका खौफ जेनी पर इस कदर है कि वह अपना घर ही छोड़ देती है "जेनी ने मन ही मन तय कर लिया कि वह मर जायेगी मगर जिस घर में डेविड जैसा दरिंदा रहता है वहां हरगिज नहीं जायेगी।" जेनी इस शोषण से बचने के लिए घर छोड़ देती है और एक संस्था उसकी मदद करती हैं। इसी प्रकार कहानी 'वह एक पल' में भी पिता द्वारा दत्तक बेटी के साथ बलात्कार की घटना का वर्णन है वहाँ भी सोनिया अपना घर छोड़ कर दूर चली जाती है परन्तु एक कठिन निर्णय भी लेती है और अपने पिता की सन्तान को जन्म देती है । अपने पिता की इस हरकत पर वो बहुत ही अकेलापन महसूस करती हैं - "आज डैडी की एक हरकत ने उससे वो छत छीन ली जिसके नीचे एक लड़की स्वयं का सबसे अधिक सुरक्षित समझती है । नहीं, किसी चीज पर इतना हक नहीं जताना चाहिए । तकदीर का एक ही धक्का मुंह के बल कीचड़ में गिरा देता है ।"

परिवार हमारे भारतीय समाज की सबसे मजबूत संस्था है । नीना पॉल की कहानियों में पारिवारिक रिश्तों का बड़ा सजीव चित्रण किया है और भारतीय समाज की इस विशेषता को बड़ी खूबसूरती से उकेरा है कि जहाँ लड़की परिवार को बिखरने से बचाने के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिए तैयार हो जाती है वहां लड़के अपने ऐशो-आराम के लिए परिवार, अपने रिश्तों को भी ठुकरा देते हैं । 'वापसी' कहानी हमारे समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करती है जहाँ माँ-बाप अपने सपने पूरे करने के लिए बेटे को विदेश तो भेज देते हैं परन्तु विदेशी चकाचौंध और पैसे का लालच विमल को विदेश में ऐसा जकड़ लेता है कि वह अपनी पत्नी से सच्चा प्रेम करते हुए भी वापिस नहीं आ पाता - "विमल भी मजबूरियों के बहाने ढूंढने लगा । विलायत की ऐशोआराम और मस्ती भरी जिंदगी के सामने गांव का सीधा-साधा जीवन फीका पड़ने लगा । फिर जेनिफर जैसी प्रेमिका, जो उसे कुछ भी सोचने का मौका ही नहीं देती थी ।" इस प्रकार माता-पिता के सपने और विमल का ऐशो आराम का जीवन उसे अपने ही परिवार से दूर कर देता है परन्तु जिस जेनिफर के लिए वो अपनी पत्नी को भूल जाता है वही उसकी प्रेमिका उसे अपाहिज होने पर उसे ठोकर मारकर आगे बढ़ जाती है और यही इस समाज का यथार्थ है । लेकिन इसी भारतीय समाज का एक यथार्थ यह भी हैं कि नारी हमेशा अपना, अपने सुखों का अपने परिवार के लिए त्याग ही करती हैं । 'पुराना पैकेज' ऐसी ही एक नारी आरती की कहानी हैं जो अपनी मरी हुई बहन के बच्चों के लिए और अपनी माँ की भावनाओं का आदर करते हुए अपने से दुगुने उम्र वाले जीजा से विवाह करती है और अपनी इच्छाओं की बलिदानी दे देती है । इतना करने पर भी अपनी सन्तान को जन्म देने पर उसे अपनी पति से परायेपन के ताने सुनने पड़ते हैं । पहले अपने मायका परिवार की खुशियों के लिए वह त्याग करती है तो बाद में अपने बच्चों की खुशियों के

लिए अपने सारे सुखों का बलिदान करती रहती हैं भारतीय समाज की इस कड़वी सच्चाई को नीना पॉल ने बड़ी सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया है।

नीना पॉल ने जहाँ एक ओर परम्परागत नारी छवि को प्रस्तुत किया है वहीं दूसरी ओर समाज में मरती मानवता, युवा पीढ़ी में नशावृति आदि विषयों पर भी लेखनी चलाई हैं । कहानी 'समय का फेर' बदलते समय और बदलते रिश्तों का चित्रण है कि समय के साथ-साथ किस प्रकार व्यक्ति स्वयं को बदल लेता है परन्तु वह बदलाव हमेशा सुखद ही नहीं होता । कहानी सास बहू के रिश्ते पर केन्द्रित है । विवाह के पश्चात् नंदिता और शालिनी का रिश्ता सास-बहू का न होकर सहेलियों जैसा था परन्तु सास के ज्यादा सुन्दर होने और सहेलियों द्वारा उकसाये जाने पर नंदिता अपनी वृद्ध होती सास के साथ बुरा व्यवहार करने लग जाती है और शालिनी अपने घर में ही स्वयं को उपेक्षित महसूस करती है जोकि आधुनिक वृद्ध जीवन का एक आम समस्या बन गई है । इसी प्रकार कहानी 'जकड़ती जंजीरे' में दिखाया गया है कि समय के साथ अपने भी मुंह फेर लेते हैं, अपने स्वार्थ के कारण हम अपनों से ही धोखा करते हैं और उनके उपकार को भी भूल जाते हैं साथ ही इस कहानी में युवा पाढ़ी में बढ़ती नशा एवं लालच प्रवृत्ति को भी दर्शाया है । कहानी में ट्रेसी अपनी सहेली की खुशियों के लिए अपने बच्चा उसे दे देती है परन्तु लिंडा बेटा पाकर बदल जाती है और अपनी सहेली से दूर देश में चली जाती है ताकि कहीं ट्रेसी अपना बेटा वापिस न मांग ले । गोद लिए बच्चे की खातिर वह स्वार्थी हो जाती है कि वह अपनी सहेली के आंसुओं को भी अनदेखा कर देती है - "ममता अंधी होती है यह तो सुन रखा था परन्तु इतनी स्वार्थी भी हो सकती है यह पहली बार ट्रेसी ने देखा था । दुख उसे इस बात का था कि बेटा दे कर उसे बचपन की सहेली को खो दिया ।" इसी कहानी में ट्रेसी का अपना बेटा निकोलस नशे और लालच में अनजाने में ही अपने भाई का कत्ल कर देता है ।

प्रवासी साहित्यकारों द्वारा लिखी कहानियों में समाज के विविध रूप देखने को मिलते हैं । ये कहानियां हमें विभिन्न परिवेश में रहने वाले लोगों से परिचित करवाती हैं । 'जन्म का कर्ज' कहानी में ऐसे लड़के की कहानी है जो विदेशी लड़की से विवाहित है परन्तु अपनी माँ की जिद और पिता की बिमारी से मजबूर होकर माला से विवाह तो कर लेता है परन्तु पहले ही दिन उसे सच्चाई से अवगत भी करवा देता है । अपनी अलग-अलग कहानियों में नीना पॉल ने जिन्दगी और इन्सान के अलग-अलग रूपों का वर्णन किया है जहाँ पिता ही अपनी बेटी पर बुरी दृष्टि रखते हैं तो दूसरी तरफ विवाहित पत्नी के मान-सम्मान की चिन्ता करते हुए राजन पहले ही दिन सच्चाई बताकर उसे सम्मान सहित घर छोड़ आता है यदि वह चाहता तो अपनी पत्नी का नाजायज फायदा भी उठा सकता थी ।

प्रवासी साहित्य भारतीय मन की उपज है परन्तु उसका परिवेश विदेशी धरती है इसलिए अधिकांश प्रवासी साहित्य में हमें दोनों संस्कृतियों का मिश्रण दिखाई देता है । जहाँ कुछ पात्र भारतीयता के रंग मं रंगे दिखाई देते हैं । भारतीय रीति रिवाजों का अनुसरण करते परिलक्षित होते हैं वहीं कुछ ऐसे पात्र भी हैं जो पाश्चात्य संस्कृति में पूर्ण रूपेण लिप्त दिखाई देते हैं । 'दोहरा बंधन' कहानी के मुख्य पात्र प्रवासी हैं, विदेश में रहते हुए भी मन से भारतीय हैं परन्तु विदेश में जन्मे उनके बच्चे पाश्चात्य संस्कृति में डूबे हुए है जो अपने माता-पिता को भी कोरा जवाब दे देते हैं- "कितने साल हो गये आपको इंडिया से यहां आए, लेकिन अभी भी आप वहीं के दकियानूसरी उसूल, संस्कार जाने क्या-क्या लेकर चल रहे हैं । प्लीज़ आप भी थोड़ा आगे बढ़िये और हमें भी हमारी जिंदगी अपने तरीके से जीने दीजिए ।' उस समय ख़ामोशी से बच्चों के मुंह देखने के सिवाए कोई और चारा भी तो नहीं होता ।"

Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2348-473X

उपसंहार

एक कहानीकार का असली कथ्य उसकी कहानियां ही होती है जो मानवीय संवेदनाओं, जीवन तथा मूल्यों का दर्पण भी होती है । नीना पॉल की कहानियां इस उक्ति को सार्थक करती हैं। नीना पॉल ने अपनी कहानियों में हर विषय, समस्या पर लेखनी चलाई है । मानव के प्रत्येक रूप पिता, पुत्र, भाई, बहन, माँ, बेटी को ऐसे पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया है जो कहीं न कहीं हमारे अपने आस-पास के समाज में विचरण करते दिखाई देते हैं । स्वयं लेखिका के शब्दों में कहें तो उनकी कहानियों में पाठकों का परिचय रिश्तों की बहुत सी शृंखलाओं से होता है और पाठक उसमें उलझते हैं और बाहर निकलने का रास्ता भी ढूंढ लेते हैं । सच भी है नीना पॉल की कहानियों को पढ़कर पाठक यही अनुभव करता है और यही उनकी लेखकीय सफलता का प्रमाण है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रवासी हिन्दी कहानी एक अन्तर्यात्रा, संपादक डॉ. सुषमा आर्य, डॉ. अजय नावरिया
2. फासला एक हाथ का-नीना पॉल
3. सहृदय (भाषा, साहित्य, संस्कृति, संवेदना और शोध का त्रैमासिक) - संपादक - डॉ पूरनचंद टंडन